Introduction

-=: भूमिका :=-

अन्य साहित्य विधाओं की तुलना में कथा अधिक जनाभिमुख एवं जन-प्रिय विधा के रूप में स्थापित हो चुकी है । आबाल-वृद्ध सभी पर कथा का एक विशिष्ट जादुई प्रभाव पड़ता है । आदि-अनादि काल से विश्रुत मनोरंजकता, कौतूहल, रोचकता तथा जीवन के निकटवर्ती आत्मीय चित्रों से आत्मसात् होने की उसकी प्रवृत्ति कथा-साहित्य की वे विशेषताएं हैं जो सभी वर्ग, समूह, अवस्था तथा विभिन्न परिवेश के पाठकों को अपने में बांधे रखती है ।

मेरे मन में भी कथा-साहित्य के प्रति प्रारंभ से ही एक अनुराग-भाव तथा पक्षपात रहा है, जो हिन्दी तथा गुजराती कथा-साहित्य के अवगाहन से और भी परिष्कृत होता गया । फलतः शैक्षणिक पाठ्यक्रम के उपरांत कहानी-उपन्यास पढ़ने का एक चस्का-सा लग गया । कोई कहानी हाथ लगती या उपन्यास सामने पड़ जाता तो मन की ललक उसकी तरफ बरबस खींच ले जाती और लाख अन्य वस्तुओं के बावजूद उसे पूर्ण किए बिना मन चैन न लेने देता । अतः एम. ए. (हिन्दी) करने के उपरांत जब शोध कार्य करने की इच्छा बलवती हुई तो मैंने इसे अपने गुरु तथा तत्कालीन हिन्दी विभाध्यक्ष प्रोफेसर दयाशंकर शुक्ल से मिलकर मंतव्य प्रकट किया । उन्होंने न केवल मेरे इस निर्णय की सराहना की, अपितु मुझे प्रोत्साहित करते हुए एतद्विषयक कतिपय ग्रंथों के नाम सुझाए जिससे मेरी शोध की दिशा निर्दिष्ट हों तथा शोध-प्रक्रिया तथा प्रविधि का मुझे विधिवत् ज्ञान हो जाय । उन्होंने हिन्दी कथा-साहित्य पर अपावधि हुए प्रकाशित शोध महानिबंधों को देख जाने का भी सुझाव दिया । कुछ समय के उपरांत मैं आदरणीय डॉ. शुक्लजी से पुनः मिली, आधुनिक कथा-साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर कमलेश्वर के कथा-साहित्य को अपने शोध का विषय बनाने का परामर्श दिया । मैंने अपने एम. ए. तक के अध्ययन काल कमलेश्वर की कहानियां पढ़ीं थीं जिनमें "राजा निरबंसिया", "कस्बे का आदमी", "खोई हुई दिशाएं", "मांस का दरिया", "दिल्ली में एक मौत" जैसी कहानियों से मैं सविशेष प्रभावित हुई थी । "समुद्र में खोया हुआ आदमी" तथा "डाक बंगला" और "काली आंधी" उपन्यासों को भी पढ़ने का सुयोग मिला था, अतः मेरे लिए तो वह गुजराती कहावत "भावतुं हतुं ने वैद्ये कह्युं" अर्थात् जो चीज पहले से प्रिय थी वैद्य ने भी उसी को खाने के लिए कहा, वाली हर्षोल्लासित

स्थिति का निर्माण हुआ । मैंने अपने गुरुवर्य की आज्ञा को सहर्ष शिरोधार्य किया और कमलेश्वर के कथा-साहित्य के अवगाहन-अनुशीलन में स्वयं का पूर्णरूपेण व्यापृत कर दिया ।

आदरणीय डॉ. शुक्लजी के निर्देशानुसार मैंने कमलेश्वर के साहित्य की छान-बीन का श्रीगणेश किया । कमलेश्वर एक बहुमुखी प्रतिभा तथा बहुआयामी व्यक्तित्व वाले साहित्यकार हैं । समकालीन साहित्य की तमाम गतिविधियों से उनका सीधा सरोकार है । देश की बहुरंगी तथा अनेक पक्षीय सामाजिक, पारिवारिक राजनीतिक, सांप्रदायिक, प्रादेशिक, भाषिक समस्याओं से उनका कलाकार मन निरंतर जूझता रहा है । वे "सारिका" कहानी-पत्रिका के संपादक के रूप में भी बरसों कार्यरत रहे । आठवें दशक में उन्होंने "समांतर-कहानी" के आंदोलन को भी चलाया था । "नई कहानी की भूमिका" उनका मौलिक कहानी-समीक्षा का ग्रंथ है जिसमें कहानी और "नयी कहानी" के भेद को स्पष्ट करते हुए नयी कहानी के कुछ व्यावर्तक एवं विभाजक लक्षणों को निर्धारित किया था ।

इस प्रकार कमलेश्वर के साहित्य तथा उनके साहित्य पर लिखी समीक्षाओं के निरंतर पढ़ने का एक क्रम-सा बन गया । समीक्षा-पठन से जी उब जाता तो कमलेश्वर की कहानियों को पढ़कर उसे पुन: स्फूर्ति करने की कला को मैं शनै: शनै: अंगीकृत करती जाती थी । फलत: कमलेश्वर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित सूचनाओं का शोध-प्रविधि से समायोजन करते हुए कुछ लेखनुमा सामग्री मैंने अपने निर्देशक के सामने प्रस्तुत की । उन्होंने मेरी कुछ त्रुटियों की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया और मैंने विनम्रतापूर्वक उनके निर्देशानुसार कुछ आवश्यक परिहार किया । यह क्रम निरंतर अनेक दिनों तक चलता रहा क्योंकि साहित्य शौकिया तौर पर पढ़ना एक बात है और उसका अनुशीलन शोध-प्रविधि के अनुरूप करते हुए शोध-कार्य में उसका समुपयुक्त सन्निवेश करना उतना ही दुष्कर एवं अध्यवसायपूर्ण कार्य है । जब तक शोध-कार्य के प्रति "डेडिकेशन" - प्रतिश्रुतता नहीं होगी, तबतक उसकी सही "ट्यूनिंग" नहीं हो सकती । अत: शोध-प्रविधि, उसके अनुरूप भाषिक अभिव्यक्ति-कौशल, शोध-समस्याओं का सुनियोजित आकलन, उनका तर्कपूर्ण विश्लेषण, निष्कर्षों का समायोजन प्रभृति शोध-तंत्र के नाना आयामों में दक्षता प्राप्त करने

हेतु, एम. ए. उत्तीर्ण करने के समय से लेकर शोध-विषय के पंजीकृत होने तक में मुझे पूर्वोक्त सभी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ा है । अंततोगत्वा मेरा नाम पी. एच. डी. उपाधि हेतु पंजीकृत हो गया और विषय रहा- "कमलेश्वर और उनका कथा-साहित्य : एक अनुशीलन" ।

विषय-पंजीयन उपरांत कमलेश्वर के साहित्य का अनुशीलन प्रारंभ किया तो ज्ञात होता चला कि कमलेश्वर समकालीन दौर के एक मूर्धन्य हस्ताक्षर हैं और कहानी तथा उपन्यास उभय में उनकी गति एक समान और सहज है । कहानी और उपन्यास दोनों को उन्होंने नयी दिशा, नयी गति प्रदान की है । प्रेमचन्द जिस मानवीय संवेदना के जीवन भर पक्षधर रहे, वह मानवीय संवेदना, कमलेश्वर के साहित्य में पग-पग पर मिलती हुई प्रतीत होती है पीड़ित, शोषित, आर्त, दलित, उपेक्षित मानव-समुदाय की संवेदनाओं को उश्केरना हमेशा ही उनका लक्ष्य रहा है । कहानी हो, उपन्यास हो, लेख हो, परिचर्चा हो, आकाशवाणी, फिल्म या दूरदर्शन का छोटा पर्दा हो, कमलेश्वर की यह "आर्त्तवाणी" अपने नैरन्तर्य में मुखरित होती रही है ।

कहानी साहित्य में जैसा कि निर्दिष्ट किया जा चुका है, उन्होंने एक नये कहानी-आंदोलन को जन्म दिया । नयी कहानी के पुरोधा लेखक के दायित्व का निर्वाह करते हुए न केवल उसे लिखा, प्रत्युत उसे व्याख्यायित भी किया । लघु-उपन्यासों की सृष्टि की । संपादक के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई । अनुवाद किया । अनेक वर्षों तक दूरदर्शन से उनकी ओजस्वी वाणी अपने दर्शकों के मनों में संवेदनात्मक अनुभूति जगाती रही । प्रत्येक क्षेत्र में एक अलग "कमलेश्वरीय तेवर" की सृष्टि की । उनके उपन्यास "काली आंधी" से निर्मित फिल्म "आंधी" कला की समझ रखने वालों में बहुचर्चित रही । अनेक फिल्मों में पटकथा-लेखन का कार्य भी बखूबी निभाया । यों उनकी प्रतिभा बहुमुखी और बहुआयामी है ।

अतः यह असंदिग्ध रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी कथा क्षेत्र में कमलेश्वर अग्रिम पंक्ति के लेखक हैं । वे अपनी कहानियों तथा लघु-उपन्यासों में "युग सत्य" को सूक्ष्मता एवं सांकेतिकता के साथ निरूपित करने में सिद्धहस्त हैं । उनके सहधर्मी कथाकार राजेन्द्र यादव के शब्दों में "कमलेश्वर अपना सच नहीं बोल

सकता, मगर अपने युग और पीढ़ी का सच वह जरूर बोल सकता है, क्योंकि उसके पास जबान है और उसे बात करनी भी आती है ।"

कमलेश्वर के कथा-साहित्य के समग्रावलोकन से इतना तो निश्चय ही कहा जा सकता है कि समग्रतया उनकी दृष्टि जनवादी रही है । कमलेश्वर ने प्रगतिशीलता के नाम पर नारेबाजी का नकली मुखौटा कभी नहीं लगाया । रवीन्द्रनाथ के शब्दों को उधार लें तो "शौकीन मज़दूरी" नहीं अपनायी । भारत के अनेक लब्ध प्रतिष्ठ लेखकों से भी कमलेश्वर परिचित रहे हैं । बंगला साहित्य के सुप्र-सिद्ध कथाकार विमल मित्र ने कमलेश्वर के विषय में लिखा है : "मेरे निरपेक्ष विचार में कमलेश्वर साहित्य के डिकेन्स हैं । कमलेश्वर के किसी भी लेखन में पुनरावृत्ति नहीं पाई जाती । सूर्य एक होने पर भी रोज प्रत्येक सुबह नवजन्म लेता है । कमलेश्वर एक लेखक होने पर भी हर लेखन में नवजन्म लेता है ।" (कमलेश्वर : मधुकर सिंह - पृष्ठ-367)

डॉ॰ घनश्याम मधुप ने अपने शोध-प्रबंध "हिन्दी लघु-उपन्यास" में यथार्थतः कमलेश्वर के लेखन का मूल्यांकन करते हुए लिखा है-"वह निर्मल वर्मा तथा आधुनिक कथाकारों की भाँति अपने परिवेश से कटकर कृत्रिम अभिजात्य में नहीं जीते । कारीडार, किचन, नाइट-क्लब और बार की ज़िन्दगी से दूर उनके लघु उपन्यासों में आम हिन्दुस्तानी की ज़िन्दगी ही दीख पड़ती है । यही कारण है कि कमलेश्वर की कथा-कृतियों में रोटी-रोजी, पति-पत्नी की कलह और प्रेम, शंकाएं, आस्था और निराशा आदि सब कुछ अपने यथार्थ रूप में ही आते हैं ।"

अतः हिन्दी के आधुनिक कथा-साहित्य में कमलेश्वर का एक निश्चित व महत्वपूर्ण स्थान है । उनकी भाषा का अपना एक मुहावरा है । उनकी अपनी, नितान्त निजी दृष्टि है, अतः कमलेश्वर के कथा-साहित्य का जितना ही अवगाहन होगा हिन्दी के आलोचनात्मक साहित्य-राशि में उतनी ही वृद्धि होगी तथा ज्ञान व शोध के नये आयाम खुलेंगे । कमलेश्वर पर कार्य करना जितना चित्ताकर्षक है उतना ही कठिन भी है । अतः विषय के साथ न्याय करने की दृष्टि से मैंने अपने समग्र अध्ययन को सात अध्यायों में विभक्त किया है ।

प्रथम अध्याय कमलेश्वर के कृती-व्यक्तित्व पर आधृत है-"कमलेश्वर का

व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।" इसमें कमलेश्वर के बहुरंगी मायावरी ज़िन्दगी का लेखा-जोखा संक्षेप में रखने का प्रयास किया गया है, तो वेशभूषा, रहन-सहन, अभिरुचियाँ, दिनचर्या जैसे मुद्दों को लेकर उनके व्यक्तित्व के बाह्य-पक्षों को रेखांकित किया गया है । इसी अध्याय के दूसरे खण्ड में उनके रचनाकार, उनके कृतित्व के अनेक रूपों को उपन्यासकार, कहानीकार, संपादक, आलोचक, दूरदर्शन-निर्देशक, सिनेमा-संवाद लेखन जैसे उपशीर्षकों के अंतर्गत विश्लेषित करने की चेष्टा हुई है ।

द्वितीय अध्याय में "कमलेश्वर के कथा साहित्य का वर्गीकरण प्रस्तुत करते हुए उनके उपन्यासों तथा कहानियों का संक्षेप में परिचय दिया गया है । उपन्यासों में विशेषत: "काली आंधी", "डाक बंगला", "लौटे हुए मुसाफिर", "एक सड़क सत्तावन गलियां", "तीसरा आदमी", "आगामी अतीत", "समुद्र में खोया हुआ आदमी", "सुबह-दोपहर-शाम", "रेगिस्तान" आदि को लिया गया है, तो कहानी-संग्रहों में "राजा निरबंसिया", "कस्बे का आदमी", "खोई हुई दिशाएँ", "माँस का दरिया", "जिन्दा मुर्दे", "जार्ज पंचम की नाक", "इतने अच्छे दिन", "मेरी प्रिय कहानियां" आदि संकलनों की कहानियों को समाकलित किया है ।

तृतीय अध्याय में कमलेश्वर के कथा-साहित्य का वस्तु-विवेचन प्रस्तुत है । कथा-संगठन की दृष्टि से इसमें आलोच्य उपन्यासों तथा कहानियों पर विचार हुआ है । चतुर्थ अध्याय कमलेश्वर की चरित्र-सृष्टि पर है । इसमें उपन्यास तथा कहानी उभय के प्रमुख चरित्रों की विशेषताओं को उद्घाटित करने का उपक्रम रहा है । पंचम अध्याय कमलेश्वर के कथा-साहित्य में निरुपित समसामयिक समाज तथा उसकी समस्याओं को लेकर है । इसमें भी उपन्यास तथा कहानी दोनों की दृष्टि में रखते हुए समसामयिक समाज की विभिन्न समस्याओं को आकलित करने का यत्न हुआ है । षष्ठ अध्याय में आलोच्य उपन्यास तथा कहानियों की पृष्ठभूमि में शिल्प-सौष्ठव, कथोपकथन तथा भाषिक-संरचना प्रभृति शिल्प-संगठन तथा भाषा-कर्म से संबंधित मुद्दों की पड़ताल की गई है ।

सप्तम अध्याय "उपसंहार" का है, जिसमें समग्र प्रबंध का समाहार करते हुए विषय के महत्व, उपलब्धियों और भविष्य की संभावनाओं पर विमर्श हुआ है । प्रबंध के अन्त में चार परिशिष्टों के अंतर्गत संदर्भ-ग्रंथों की सूची, तथा पत्र-पत्रिकाओं

की सूची दी गई है । प्रत्येक अध्याय के अंत में निष्कर्ष तथा संदर्भ संकेत-तालिका को रखा गया है ।

इस शोध-प्रबंध के सुगंथन में अनेक महानुभावों का योगदान है । मेरे निर्देशक गुरुवर प्रो॰ डॉ॰ दयाशंकर शुक्ल की मुझ पर अतीव कृपा रही है । उनके आंतर-बाह्य व्यक्तित्व, उनकी ज्ञान-निष्ठा, शोध-निष्ठा, उनके इस क्षेत्र का विपुल अनुभव तथा उनका बाहर से कठोर किन्तु भीतर से कोमल स्वभाव इन सभी का प्रभाव इसमें सहजतया दृष्टिगोचर होगा । अतः उनकी शिष्य-वत्सलता के प्रति मैं शतशः प्रणत हूँ । उनके ऋण से अऋण होना मेरे लिए संभव नहीं है ।

मेरे इस कार्य में श्रीमती डॉ॰ इन्दु शुक्ल का योगदान भी कम नहीं है । उनका शोध-कार्य भी उपन्यास पर ही है । अतः प्रबंध के प्रारूप को अंतिम रूप देने में, वस्तु-संगठन तथा चरित्र-चित्रण से सम्बद्ध प्रश्नों के निराकरण में तथा प्रबंधन के ऐसे ही अनेक कार्यों में उन्होंने मुझे यथायोग्य मार्गदर्शन देकर अनुगृहीत किया है । इस विदुषी सन्नारी का मैं जितना भी आभार मानूँ कम होगा ।

हिन्दी विभाग के रीडर तथा शोध-अनुसंधान के क्षेत्र में उपन्यासविधा के विशेषज्ञ डॉ॰ पारुकांत देसाई ने भी समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया है, अतः यहां उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा परम कर्तव्य है । इनके अतिरिक्त हिन्दी विभाग के वरिष्ठ रीडर ने भी मुझे प्रोत्साहित किया है, अतः उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ । इसी तरह मैं श्रीमती शशीरावत (चण्डीगढ़) की भी बहुत आभारी हूँ जिन्होंने अपना शोध प्रबंध भेजकर मेरे शोध कार्य में सहायता की है । मैं अपने परिवारजनों- विशेष कर पति श्री राजेन्द्रसिंह सिकरवार और बेटी राशी के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहूँगी जिन्होंने लम्बे समय तक चलने वाले इस शोध कार्य के दौरान अपना पूर्ण सहयोग दिया है । मैं अपनी आदरणीया भाभी डॉ॰ श्रीमती साधना जंगबहादूर राजपूत (रीडर अप्लाइड केमिष्ट्री फेकल्टी ऑफ टेकनोलोजि, म॰श॰ विद्यालय) ने भी लगातार कार्य पूर्ण करने को अत से इति तक देखा है और मेरी असावधानियों को दूर करने का प्रयास भी किया है । मैं मधुकरसिंह और डॉ॰ पुष्पपाल सिंह जी की बहुत आभारी हूँ, जिनके ग्रंथों से मुझे बहुत ही सहायता मिली है । यह शोध प्रबन्ध जिनके साहित्यिक कृतित्व और

-=: :=-

व्यक्तित्व से मंडित है, उन कथा पुरुष कमलेश्वर जी के प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना मेरे जैसी छात्रा के लिए शक्य नहीं है । केवल उनके प्रति प्रणाम निवेदित है ।

व्यक्ति पर कई प्रकार के ऋण होते हैं, यथा-मातृत्व, पितृऋण, देवऋण, ऋषिऋण या गुरुऋण । मेरे इस कार्य से गुरुऋण को मेटने का यदि यत्किंचित भी संभव हुआ तो मैं अपने को कृतकृत्य समझूंगी । मनुष्य द्वारा संपादित कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता, फिर मैं तो एक अल्पमति शोध-छात्रा हूँ, अतः संभव है कि मेरे कार्य में कुछ त्रुटियां रह गई हों । उन सब के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ । यह शोध-कार्य हिन्दी-शोध की दिशा को यदि क्षणार्ध के लिए भी आलोकित कर सका तो मैं स्वयं को कृतार्थ मानुंगी । पंडित राजशेखर ने "काव्य मीमांसा" में भावक और कवि (कृतिकार) के बीच स्वामी, मित्र, मंत्री, शिष्य और आचार्य यों कई प्रकार के सम्बन्ध निरूपित किए हैं । इस प्रबंध में जहां स्वामी या आचार्य का भाव दृष्टिगत हो वहां हिन्दी के वरिष्ठ विद्वज्जनों तथा मेरे निर्देशक का योगदान समझा जाय और जहां शिष्य, मित्र या मंत्री का भाव दृष्टिगत हों वहां उसे मेरा यत्किंचित परिश्रम या अध्यवसाय समझा जाय । "वादे वादे जायते तत्वबोधाः" इस आशा के साथ --

एम-10, तारा बाग
पोलीटेकनिक केम्पस
बड़ौदा. (गुजरात)

- कुन्ता ठाकुर -

-=:*****:=-